नरेंद्र मोदी की चुप्पी, शिखर धवन का अंगूठा और मरते बच्चे

राजेश प्रियदर्शी

दरअसल, लगातार सक्रिय और मुखर रहने वाले लोगों की चुप्पी पर अक्सर ध्यान चला जाता है। जो नेता जनता से लगातार संवाद कर रहा हो, लेकिन एक ख़ास बड़े मुद्दे पर चुप हो तो ये ख़याल आना लाजिमी है कि आख़िर इसकी वजह क्या है.

पीएम के तौर पर अपने पिछले कार्यकाल के अंत में वे बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह के साथ अपनी पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में नज़र आए, लेकिन सुनाई नहीं दिए. सुनाई दी उनकी गूंजती हुई चुप्पी।

प्रेस कानफ्रेंसों और सवालों के जवाब देने से परहेज़ करने की पीएम मोदी की नीति के पीछे उनकी सोच चाहे जो भी हो, लेकिन एकतरफ़ा संवाद उन्हें ख़ास पसंद हैं, इसके माध्यम के तौर पर प्रधानमंत्री को ट्विटर विशेष प्रिय है। शपथ लेने के बाद नरेन्द्र मोदी ने कुल 134 ट्वीट किए हैं जिनमें मुज़फ़्फ़रपुर के बच्चों की बारी नहीं आ पाई है।

गाय के नाम पर होने वाली हत्याओं, राफ़ेल, लगातार हो रही रेल दुर्घटनाओं और गोरखपुर के सरकारी अस्पताल में बड़ी संख्या में बच्चों की मौत जैसे अनेक मामलों में पूरे पांच साल तक लोगों ने नरेंद्र मोदी के ट्विटर हैंडल पर नज़र रखी और उन्हें निराशा ही हाथ लगी।

ऐसा नहीं है कि नरेंद्र मोदी ने इन मुद्दों पर कुछ नहीं कहा, लेकिन उन्होंने तब कहा जब उनका जी चाहा, उस वक़्त बिल्कुल नहीं, जब लोग चाहते हों कि वे कुछ कहें। बड़े राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय ज़ाहिर करने का समय खुद चुनकर, प्रेस कॉन्फ्रेंस न करके या सवालों के जवाब न देकर वे क्या जताना चाहते हैं?

वे शायद यही जताना चाहते हैं कि वे किसी के दबाव में नहीं हैं, वे किसी और की नहीं, अपनी मर्ज़ी से चलते हैं, और उनसे मांगकर कोई जवाब नहीं ले सकता।

वे परिस्थितियों के अधीन काम नहीं करते बल्कि अपनी राजनीति के अनुरूप परिस्थितियां खुद बनाते हैं।

इसे आप राजनीतिक चतुराई समझें, उनका अहंकार समझें या अपने विरोधियों को बेमानी बनाने की कोशिश, यह आपकी मर्ज़ी है। यह तो हम-आप सुनते ही रहे हैं कि प्रधानमंत्री से हर मामले पर लगातार बोलते रहने की उम्मीद करना ग़लत है।

अब सवाल ये है कि 'हर मामला' क्या है, और 'ख़ास मामला' क्या है. इसके लिए नरेंद्र मोदी के ट्विटर हैंडल को ज़रा ग़ौर से देखना होगा।

बिहार में जहां भारतीय जनता पार्टी सत्ता में साझीदार है, जहां राज्य के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे बीजेपी के नेता हैं, वहां इतनी बड़ी संख्या में बच्चों की लगातार मौत की ख़बरें पिछले 20 दिनों से आ रही हैं।

मीडिया ने देर से ही सही, हंगामाखेज़ रिपोर्टिंग शुरू की है यानी मामला राष्ट्रीय सुर्खियों में है। मीडिया कवरेज के बारे में चर्चा करना यहां मकसद नहीं है लेकिन ज़्यादातर चैनल यही बताने की कोशिश कर रहे हैं कि डॉक्टर बच्चों का इलाज ठीक से नहीं कर रहे हैं, लीची से लेकर जापान तक की बातें हो रही हैं लेकिन देश की सरकार की ज़िम्मेदारी की नहीं।

बहरहाल, 30 मई को उन्होंने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी, तकरीबन इसी समय से बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले से बच्चों की मौत की खबरें आनी शुरू हुई थीं, जब 20 से ज़्यादा दिन गुज़र चुके हैं, राज्य में 150 से अधिक बच्चे मौत की नींद सो चुके हैं. डॉक्टर इस बात पर आम राय रखते हैं कि इस बीमारी का सही तरीके से इलाज होने पर जानें बच सकती थीं यानी मेडिकल चूक नहीं, प्रशासनिक और व्यवस्थागत नाकामी है.

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन और स्वास्थ्य राज्य मंत्री अश्विनी चौबे ने पटना में पत्रकारों के सवाल के जवाब ज़रूर दिए हालांकि उस प्रेस कॉन्फ्रेंस की ज़्यादा चर्चा केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री की झपकियों की वजह से रही। मामले के बहुत बढ़ जाने के बाद राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अस्पतालों का दौरा ज़रूर किया लेकिन बच्चों की मौत का जिम्मेदार कौन है? इसका कोई जवाब न तो केंद्र सरकार के पास है, न राज्य सरकार के पास।

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने बीस दिनों के बाद कहा है कि वे लोगों के दुख-दर्द को समझती हैं क्योंकि उनके भी बच्चे हैं।

प्रशासन और व्यवस्था के लिए कौन ज़िम्मेदार है? इसका जवाब मीडिया डॉक्टरों से मांग रहा है। इसी मामले पर चल रही बैठक में राज्य के स्वास्थ्य मंत्री और बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष रह चुके मंगल पांडे की गंभीरता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जाता है कि वे बीच बैठक में वे पूछ रहे थे कि कितने विकेट गिरे?

क्रिकेट की चिंता केवल बिहार के स्वास्थ्य मंत्री को ही नहीं है, नरेंद्र मोदी की चुप्पी की ख़ास तौर से तब चर्चा में आई जब उन्होंने भारत के सलामी बल्लेबाज़ शिखर धवन के टूटे अंगूठे पर कुछ इस तरह की भावना ज़ाहिर की, शिखर, बेशक पिच पर आपकी कमी खलेगी, लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि आप जल्द-से-जल्द ठीक हो जाएं और मैदान पर लौटकर देश की जीत में और योगदान करे सकें।

इसके अलावा, अपने दूसरा कार्यकाल शुरू करने के बाद से नरेंद्र मोदी अनेक ट्वीट कर चुके हैं। उन पर एक नज़र डालना काफ़ी दिलचस्प होगा। कुल 134 ट्वीट में से 32 तो सिर्फ़ अलग-अलग योगासनों के बारे में हैं या फिर दुनिया भर में योग की लोकप्रियता पर हर्ष और गर्व दिखाने के लिए।

बाकी ट्वीट विश्व पर्यावरण दिवस का संदेश, योगी आदित्यनाथ को जन्मदिन की बधाई, ब्रह्मकुमारी समुदाय की आध्यात्मिक गुरु सरला दीदी के निधन पर शोक, क्रिकेट टीम को वर्ल्ड कप के लिए शुभकामनाएं, गुरुवायुर और तिरुपति मंदिर के दर्शन के सौभाग्य का उल्लेख, विदेश यात्राओं का विवरण, विदेशी नेताओं से सौहार्द्रपूर्ण मुलाकातों के बारे में हैं।

शिखर धवन की टूटे अंगूठे पर अफ़सोस जताने के बाद नरेंद्र मोदी की अगली ट्वीट में सांसदों की दावत की तस्वीरें हैं, जिसमें वे ढाई किलो का सनी देयोल का हाथ थामे मुस्कुरा रहे हैं और विजयी सांसदों को बधाई दे रहे हैं। उसके बाद वे फिर अपने प्रिय विषय योग की तरफ़ लौट आए हैं।

वैसे भी मुज़फ़्फ़रपुर के गांव में बिलख रहे माँ-बाप ट्विटर थोड़े ही देखते हैं?

एक अधूरी केदारनाथ यात्रा उर्फ़ किस्सा उत्तराखंड की बर्बादी का

ग्राउंड जीरो से अजात शत्रु की रिपोर्ट

जिस तरह 2019 के चुनाव प्रचार खत्म होते ही मोदी जी जाकर केदारनाथ में घोर तपस्या में लीन हो गये थे उससे अभिभूत होकर हम चार मित्रों ने भी पिछले हफ़्ते केदारनाथ तपस्या हेतु प्रस्थान किया। अब मोदी जी तो ठहरे पहुंचे हुए संत, चुनाव प्रचार बंद होते ही तुरन्त उड़कर केदारनाथ पहुंच गये ताकि अगले दिन पड़ने वाले वोटों से पहले तपस्या करके वोट रूपी फ़ल प्राप्त कर सके। पर हम पापियों को तो एक गाड़ी में ठुंस कर जाना था। सो रात होते-होते ऋषिकेष से आगे श्रीनगर तक ही पहुंच पाये। वहां रात के एक बजे तक भी किसी होटल में कोई कमरा नसीब नहीं हुआ। बड़ी भारी संख्या में मोदी जी के चेलों ने केदारनाथ की तरफ़ कूच कर रखा था। लिहाजा कोई होटल या धर्मशाला नहीं थी।

रात डेढ़ बजे बड़ी मुश्किल से बद्री केदार समिति की एक धर्मशाला में जगह मिली। वहां भी रात दो बजे और चार भक्तों ने जगा दिया तो हमने उनको भी अपने कमरे में घुसा लिया। सुबह उनसे बहस में पता चला कि वो केदारनाथ से ज़्यादा मोदी जी के भक्त थे। जानकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ। अहोभाग्य इस देश के। अगले दिन सुबह आगे के लिये प्रस्थान किया। सारा रास्ता टूटा हुआ, धूल धक्कड़ से भरा हुआ। जगह-जगह मशीनें पहाड़ काटने में लगी हुयी, मलबा नदी में धकेलती हुयी। जगह-जगह जाम। पता चला मोदी जी चार धाम यात्रा के लिये चार लेन का 'आल सीजन' यानी सभी मौसमों में खुला रहने वाला रोड बना रहे हैं। पहले सब काम सरकार या किसी पार्टी द्वारा होते थे, अब सब काम मोदी जी करते हैं। वे विकास पुरुष हैं, सृष्टि रचयिता ब्रह्मा के अवतार हैं। हां लेकिन जहां भी देश में विनाश हो रहा है उसके लिये नेहरू जी जिम्मेवार है, कांग्रेस का 70 साल का राज जिम्मेवार है, विनाशकारी लोग, उन्होंने कुछ नहीं किया सिवाय देश के विनाश के। लेकिन मोदी जी पूजा केदारनाथ में जाके करते हैं, भगवान शिव का धाम, सृष्टि के संहारक शिव जी। कैसा अद्भुत संयोग बिठाते हैं मोदी जी-संहारक की, विनाशक की उपासना करते हैं, उसके लिये रोड बनवाते हैं और कहलाते विकास पुरुष हैं। गजब का मोहिना नृत्य है मोदी जी का।

खैर किसी तरह तीन घण्टे का सफ़र छ: घण्टे में पूरा करके हम शाम चार बजे के लगभग सोन प्रयाग पहुंचे। तीन किलोमीटर लम्बा जाम लगा था। लगता था साधना यहीं से शुरू हो गयी थी। वापिस आनेवालों से बातचीत में पता चला कि आगे भयंकर जाम लगा है। मंदिर में दर्शन के लिये दो दिन भी लग सकते हैं। दो दिन पैदल आने-जाने में लगने थे। रात में रूकने की कोई व्यवस्था पक्की नहीं थी। सोन प्रयाग से आगे अपनी गाड़ी नहीं ले जा सकते थे। सोन प्रयाग से गौरी कुण्ड तक मोदी जी ने टैक्सियां चलवा रखी थी-भाड़ा 20 रुपये सवारी। उससे आगे 18-19 किलोमीटर पैदल रास्ता। ये सब जानकर हमारा कमजोर दिल बैठ गया। अभी तो सोन प्रयाग पहुंचने तक कई घण्टे (शायद 6-8 घण्टे) जाम में फंसना था। लिहाजा हमने बिना तपस्या के ही वापिस आने का निर्णय लिया और इससे पहले कि हमारे पीछे और गाड़ियां लगती, हम वापिस मुड़ कर भाग चुके थे।

अपनी वापसी यात्रा में हमने जगह-जगह रुकते हुये स्थानीय लोग़ों व यात्रियों (चार धाम के यात्री) से भी बातचीत की। लगभग सभी लोग मोदी जी की धर्मपरायणता से अभिभूत थे। चारों धामों के लिये ऐसा रोड बनाना, जो हमेशा हर मौसम में खुला रहे काफ़ी प्रशंसनीय काम बताया गया। हालांकि कुछ स्थानीय लोग इस बात से सशंकित थे कि इस रोड से उन्हें फ़ायदा होगा। उनका कहना था कि यात्री अब सीधे ऋषिकेश से चलकर 3-4 घण्टे में ही बद्रीनाथ या केदारनाथ पहुंच जायेंगे, वो रास्ते में रुकेंगे नहीं। इसलिये बीच के शहरों में रोजगार कम हो जायेगा। शायद वो सही थे, पर पर्यावरण से होने वाली बर्बादी के बारे में शायद ही कोई सचेत था।

मोदी जी ने चार धाम का रोड का काम 2019 के चुनाव के मद्देनजर साल 2018 में ही शुरू करवा दिया था। इसके लिये पर्यावरण मंजूरी भी नहीं ली गयी जो ऐसे बड़े कामों के लिय कानूनन जरूरी है। अगर बो ली जाती तो ये काम अभी तक भी शुरू नहीं हुआ होता और मोदी जी को चुनावों में बहुत नुक्सान उठाना पड़ता। लेकिन वो शायद इस देश की धर्मपरायणता की रग को जानते हैं। इसलिये उन्होंने रामायण सर्किट और चार धाम यात्रा के प्रोजेक्टों को सारे नियम-कायदे ताक पर रखकर चुनावों से काफ़ी पहले शुरू करवा दिया। नतीजा अपेक्षित रहा। चार धाम यात्रा पर आने वाला हर यात्री मोदी जी का चुनाव प्रचारक बनकर वापिस गया। आम आदमी को यह समझाने वाला कोई नहीं था कि इस संवेदनशील पहाड़ को इतने बड़े पैमाने पर छेड़ने के भविष्य में कितने भयंकर नतीजे होंगे।

जितने बड़े पैमाने पर गढवाल में पहाड़ों को तोड़ा जा रहा है उससे उनके स्थायित्व को गंभीर खतरा है। भू-विज्ञानी इसलिये इस प्रोजेक्ट के विरोध में अपनी चिन्ता पहले ही जाहिर कर चुके हैं। यह भी तय था कि अगर वैज्ञानिकों से इस रोड के लिये पर्यावरण मंजूरी मांगी जाती तो वह कभी नहीं मिलती। वैज्ञानिकों द्वारा ऐसा अंदेशा जाहिर किया गया है कि अपने पूरा होने के 3-4 सालों के अंदर ही यह प्रोजेक्ट, भारी भूस्खलन, मौसमी बदलाव जैसे कि बादल फ़टना आदि के जरिये उत्तराखंड में भारी तबाही लायेगा। उसके अलावा नदियों में डाले गये मलबे से बांधो और बैराजों पर बहुत ज्यादा मलबा इकट्ठा हो जायेगा जो उनको भी नुकसान पहुंचायेगा और नदी किनारे बसे अनेकों शहरों को भी रहने वालों के लिये रोजगार के अवसर कम होंगे। इसके अलावा अच्छा रोड बनने से इतने ज्यादा यात्री यहां पहुंचेंगे कि उनके लिये बिजली, पानी, रहना, खाना आदि की उचित व्यवस्था असम्भव हो जायेगी और ये भी एक बड़ी दुर्घटना का कारण बनेगा।

इस साल ही कर्ण प्रयाग से ऊपर लगभग हर पेट्रोल पम्प पर वाहनों की इतनी भारी भीड़ हो गयी थी कि हर जगह झगड़े की नौबत आयी और पुलिस तैनात करनी पड़ी। अगले सालों में इस स्थिति को सम्भालना असम्भव होगा। वाहनों से होने वाला वायु

प्रदूषण इस कदर बढ़ जायेगा कि ये न सिर्फ़ स्थानीय लोग़ों के लिये स्वास्थय को गंभीर हानि पहुंचायेगा बल्कि मौसम में बदलाव के कारण भरी जल-प्रलय लायेगा कुल मिलाकर यह प्रोजेक्ट पूरा होने के पांच साल के अन्दर-अन्दर गढ़वाल में भारी बर्बादी लायेगा।

ऐसा अनुमान है कि मोदी जी 2019 का चुनाव जीतने के बाद इस काम को अब धीमा कर देंगे क्योंकि इससे इस चुनाव में जितना फ़ायदा लेना था वो ले चुके। अब वो इसे 2023 तक पूरा करेंगे ताकि इसके दम पर वह 2024 का चुनाव जीत सकें। मोदी जी बेशक 2024 में भी धर्मभीरू जनता के दम पर चुनाव जीत जायें लेकिन उत्तराखंड की जनता का हारना तय है। मोदी जी ने 2029 से पहले पहले उत्तराखंड की बर्बादी की पट कथा लिख दी है।